6

कोविड-19 काल के दौरान ऑनलाइन शिक्षण में विद्यार्थियों के ऑनलाइन आकलन में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन

पुष्पेन्द्र यादव*

दो वर्षों से अधिक का समय हो गया है जब हम सभी कोविड-19 महामारी के संक्रमण के खतरे के साये में जी रहे हैं। हम कह सकते हैं कि हम सभी कहीं न कहीं इस महामारी से प्रभावित हुए हैं। मार्च 2020 से पूरे भारत में कोविड-19 के बढ़ते मामलों के कारण स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए गए थे। स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि यह सदी की सबसे बड़ी महामारी में से एक है। हम सभी इस महामारी में उचित दूरी के साथ अपने घरों में रहने को मजबूर हुए हैं। हमारी आदत, जीवन शैली और व्यवहार में बहुत से बदलाव आ चुके हैं। इस महामारी के चलते हमारी शिक्षा प्रणाली को एकाएक पूरी तरह से ऑनलाइन मोड में शिफ्ट होना पड़ा है, क्योंकि कोविड-19 महामारी से बचाव एवं इसकी रोकथाम के लिए आपस में उचित दूरी को बनाए रखना बेहद जरूरी था। ऐसे में ऑनलाइन आधारित शिक्षा हमें विकल्प प्रदान करती है कि हम कक्षा में या समूह में पढ़ने के बजाय अपने घरों में रहकर इंटरनेट के माध्यम से अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं। लेकिन पूरी शिक्षा व्यवस्था का अचानक ऑनलाइन मोड में शिफ्ट हो जाना विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, स्कूल लीडर्स और नीति निर्माताओं के लिए कई प्रकार की चुनौतियाँ ले कर आया है। खासकर स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों को ऑनलाइन मोड में शिक्षण-अधिगम जारी रखने के लिए बहुत बड़े स्तर पर नई तकनीकों को अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ा है। जिस कारण अलग-अलग स्तर पर विभिन्न प्रकार की समस्याएँ सामने आई हैं। ऑनलाइन मोड में चल रहे शिक्षण कार्य की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी ऑनलाइन आकलन तकनीक की जरूरत को महसूस किया गया है, क्योंकि आकलन वह प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को सुधार और उत्कृष्टता की ओर ले जाती है। ऐसे में कहा जा सकता है कि ऑनलाइन शिक्षण के उपरांत प्रभावी ऑनलाइन आकलन करना शिक्षकों, विद्यालयों और सरकार के लिए एक बड़ी चिंता का विषय बनकर उभरा है। इस समीक्षा आलेख में शोधकर्ता ने विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, विद्यालयों के प्रबंधन और नीति-निर्माताओं के दृष्टिकोण से ऑनलाइन आकलन में आने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण किया है।

**पीएच.डी. शोधार्थी*, शिक्षा विभाग (केंद्रीय शिक्षा संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय, 33, छात्र मार्ग, दिल्ली 110 007

हम सभी लगभग पिछले दो वर्षों से कोविड-19 जैसी खतरनाक महामारी के दौर से गुजर रहे हैं। पिछले दो वर्षों में हम सभी ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न चुनौतियों का सामना किया है और आज भी किसी ना किसी रूप में कर रहे हैं। महामारी के दौरान दुनिया भर के लगभग सभी देशों में निर्बाध शिक्षा प्रदान करना भी एक बड़ी चुनौती बन गई थी। ऐसे में भारत जैसे विकासशील देश के लिए जहाँ की शिक्षा व्यवस्था एक बदलाव के दौर से गुजर रही है, वहाँ कोविड-19 महामारी कई प्रकार की नयी चुनौतियाँ लेकर सामने आई है। शिक्षा के क्षेत्र में सीखने के उद्देश्यों, शिक्षण रणनीतियों और शिक्षण-अधिगम स्त्रोंतों के साथ-साथ आकलन एक ऐसी प्रक्रिया है जो बहुत महत्व रखती है। हम सभी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में आकलन के महत्व और आवश्यकता के बारे में भलीभाँति अवगत हैं। कोविड-19 महामारी के कारण हमें शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया को अचानक से ऑनलाइन मोड में संचालित करना पड़ा है, एसे में ऑनलाइन मोड पर पढ़ रहे विद्यार्थियों का आकलन भी ऑनलाइन माध्यम से किया जा रहा है। भारत के संदर्भ में जहाँ बड़ी संख्या में विद्यार्थी पढ़ने के लिए विद्यालयों का रुख करते हैं। उनको बिना रुकावट ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करते हुए उनका प्रभावी तरीके से ऑनलाइन आकलन कर पाना सरल कार्य नहीं है। ऐसे में कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न प्रमुखता से हम सभी के सामने आ कर खड़े हो रहे हैं जैसे कि, क्या चल रही ऑनलाइन आकलन की प्रक्रिया विद्यार्थियों को सुधारने में मदद कर रही है? क्या ऑनलाइन शिक्षण में विद्यार्थी पूरी दक्षता के साथ सीख पा रहे हैं? क्या ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से शिक्षक प्रभावी तरीके से विद्यार्थियों की ताकत और कमजोरी की पहचान कर पा रहे हैं? क्या ऑनलाइन शिक्षण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त है? इत्यादि। ऑनलाइन शिक्षण के इस दौर में हमें ऐसी प्रभावी ऑनलाइन आकलन पद्धति या सिस्टम की आवश्यकता है जो सीखने के सभी आवश्यक भौतिक और मनोवैज्ञानिक आयामों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों का आकलन करने में सक्षम हो। यदि वर्तमान परिदृश्य की बात करें तो भारत जैसे विकासशील देश के लिए सर्व-सुलभ प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण प्रदान करना और प्रभावी ऑनलाइन आकलन पद्धतियों या तकनीकों का विकास करना किसी चुनौती से कम नहीं है। वर्तमान में प्रयोग की जाने वाली ऑनलाइन आकलन व्यवस्था वास्तव में विद्यार्थियों में सुधार और उनके आगे बढ़ने के लिए उपयोगी सिद्ध है भी या नहीं कुछ कहा नहीं जा सकता, क्योंकि हमारे पास इसके पक्ष में या विपक्ष में अभी तक कोई भी वैध शोध-साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान में ऑनलाइन मोड में शिक्षा बिना पतवार की उस नाव के सामान प्रतीत हो रही है जो नदी की धारा के साथ प्रवाह तो कर रही है, लेकिन ये अपने यात्रियों को सकुशल नदी के किनारे पर पहुँचा पाएगी या नहीं अभी कुछ भी स्पष्ट कह पाना काफी मुश्किल है।

हमें पता है प्रभावी ऑनलाइन आकलन के लिए शिक्षक की योग्यता, विद्यार्थी की क्षमता, संसाधनों की उपलब्धता आदि, जैसी कई प्रमुख चुनौतियाँ सामने आती हैं। इस समीक्षा आलेख में हम ऑनलाइन आकलन में आने वाली चुनौतियों की ओर ध्यान केंद्रित करेंगे। ऑनलाइन आकलन की प्रक्रिया में शिक्षक की तैयारी, उचित प्रशिक्षण, कार्य का उचित चयन, विभिन्न डोमेन के लिए आवश्यक आकलन के प्रकार, जैसे विभिन्न कारक ध्यान में आते हैं। ऑनलाइन आकलन के माध्यम से सभी प्रकार के संज्ञानात्मक, प्रभावशाली और मनोप्रेरक डोमेन का आकलन कर पाना एक चुनौती है, जिस पर विभिन्न आयोगों, नीतियों और पाठ्यक्रम ढाँचे द्वारा शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में बहुत जोर दिया जाता है। इससे पहले कि हम ऑनलाइन आकलन की पृष्ठभूमि को विस्तार से समझें, हमारे लिए आवश्यक है कि हम आकलन क्या है? एवं शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में इसकी क्या उपयोगिता है? को भलीभाँति समझ लें।

आकलन (असेस्मेंट)

व्युत्पत्ति के आधार पर देखें तो आकलन शब्द का अर्थ 'विद्यार्थियों के पास बैठना' है। आकलन एक प्रकार से विद्यार्थियों के सीखने में, अंतर्दृष्टि में, प्रदर्शन में और सुधार के क्षेत्रों में प्रतिपुष्टि देने की प्रक्रिया है। शिक्षण-अधिगम के संदर्भ में इसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

- आकलन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक कमजोर विद्यार्थियों की समस्याओं के क्षेत्रों को पहचान कर उनको उन क्षेत्रों में अच्छा करने के लिए फीडबैक के साथ प्रोत्साहित करता है। जो विद्यार्थी पहले से अच्छा कर रहे हैं वो और अच्छा कैसे कर सकते हैं? इसके लिए उन्हें संभावित फीडबैक उपलब्ध कराता है। वह आकलन करने के साथ-साथ विकास के लिए एक प्रकार की प्रेरणा प्रदान करने और विद्यार्थियों को आगामी अभ्यासों के लिए अधिक प्रभावी तरीके से तैयार करने के लिए निर्देश देता है।
- आकलन हमें आवश्यक सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने में सक्षम बनाने का एक तरीका है जिसे पूरे देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बनाए रखने के लिए डिजाइन किया गया है। सीखने के प्रतिफल दस्तावेज के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विभिन्न स्तरों के लिए जारी किए जाते हैं। आकलन वह प्रक्रिया है जो हमें भविष्य में सीखने के लिए एक बेहतर और स्पष्ट तरीका बनाने के लिए और चल रही अधिगम प्रक्रिया पर प्रतिपुष्टि प्राप्त करने में मदद करती है।
- सीखने के रूप में आकलन, सीखने का आकलन और सीखने के लिए आकलन, विभिन्न स्थितियों में सीखने के विभिन्न चरणों में आकलन के महत्व को दर्शाता है।

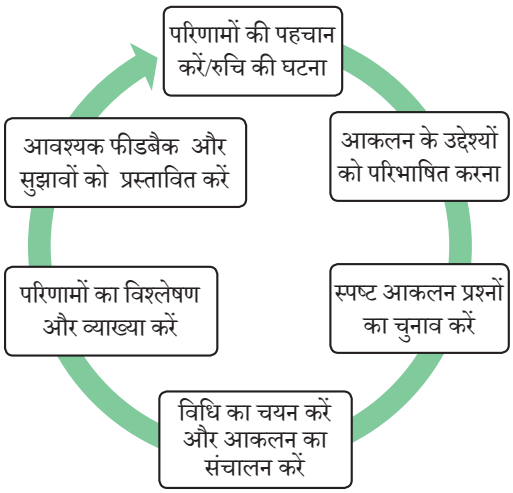

चित्र 1— आकलन के चरण

ऑनलाइन आकलन

ऑनलाइन आकलन का उद्देश्य भी ऑफलाइन आकलन की भाँति ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया की निगरानी कर विद्यार्थियों और शिक्षकों को फीडबैक देना होता है, ताकि ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को और प्रभावी बनाया जा सके। ऑनलाइन आकलन फेस टू फेस मोड में ना घटित होकर ऑनलाइन मोड में इंटरनेट के माध्यम से घटित होता है। ऑनलाइन आकलन विद्यार्थियों या प्रतिभागियों के सीखने और किसी विशेष विषय पर महारत हासिल करने के लिए, किसी ऑनलाइन तकनीक की प्रभावकारिता की जाँच करने के लिए सामान्य तौर पर ऑनलाइन परीक्षा आयोजित करके, गूगल फार्म द्वारा, प्रश्नावली द्वारा, ऑनलाइन सर्वे द्वारा अथवा किसी अन्य ऑनलाइन प्रक्रिया का सहारा लेकर किया जाता है। ऑनलाइन आकलन एक विशिष्ट इरादे से प्रशासित किया जा सकता है, जैसे— विद्यार्थियों के कौशल, ज्ञान या सीखने की क्षमता का पता लगाना; उनकी किसी विषय, तकनीक या प्रक्रिया के प्रति रूचि का पता लगाना इत्यादि। ऑनलाइन आकलन में समाहित कुछ प्रमुख तत्वों को नीचे बिंदुवार लिखा गया है—

- ऑनलाइन आकलन इंटरनेट के बिना संभव नहीं है जिस प्रकार ऑनलाइन मोड में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए विद्यार्थियों के पास इंटरनेट कनेक्टीविटी से युक्त उपकरण, जैसे— मोबाइल फोन, लैपटॉप, टेबलेट इत्यादि के साथ इंटरनेट चलाने का प्रशिक्षण होना चाहिए, उसी प्रकार ऑनलाइन आकलन के लिए भी इसी प्रकार के उपकरण और इंटरनेट चलाने का अनुभव विद्यार्थियों के पास होना चाहिए।
- ऑनलाइन मोड में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को संचालित करने के लिए विद्यार्थियों को गूगल क्लासरूम, जूम, गूगल मीट, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स, जी-मेल इत्यादि जैसे ऑनलाइन सॉफ्टवेयर्स, टूल्स और ऑनलाइन प्लेटफोर्म को इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, क्योंकि ये सारे सॉफ्टवेयर्स, टूल्स और प्लेटफोर्म ऑनलाइन आकलन करने में भी समान रूप से उपयोगी होते हैं।

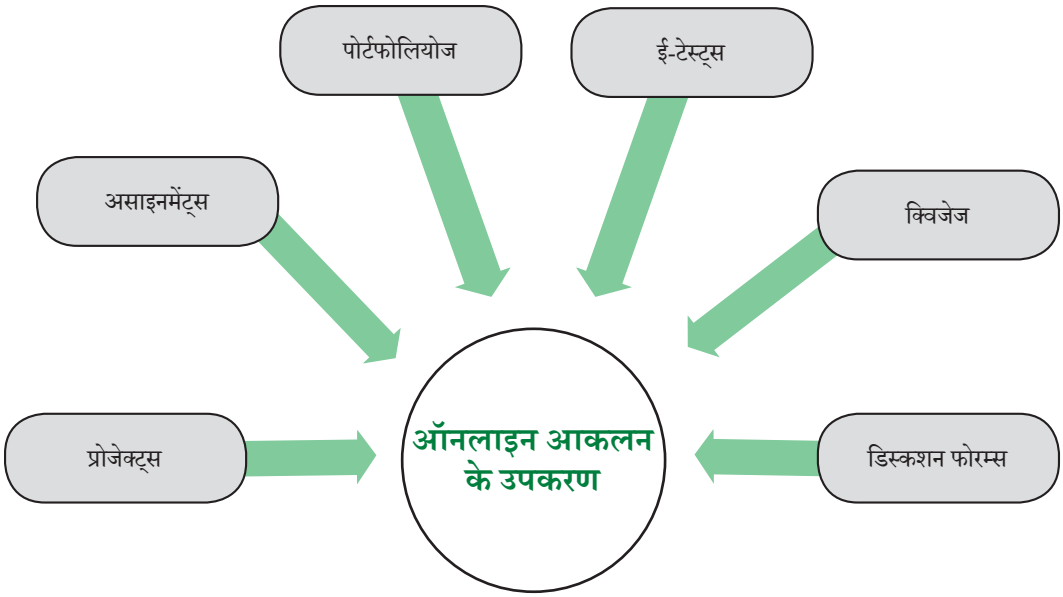

चित्र 2— ऑनलाइन आकलन के कुछ प्रमुख उपकरण

- ऑनलाइन आकलन में विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच फेस-टू-फेस इंटरेक्शन बहुत कम होता है, इसलिए समय-समय पर ऑनलाइन शिक्षण की दक्षता और विद्यार्थियों के अधिगम के स्तर का आकलन करने के लिए ई-टेस्ट्स, पोर्टफोलियोस, क्विजेज, डिस्कशन फोरम्स, प्रोजेक्ट्स, असाइनमेंट्स इत्यादि का उपयोग ऑनलाइन आकलन में टूल के रूप में किया जाता है जो कि ऑफलाइन आकलन से या पेन-पेपर द्वारा आकलन से काफी अलग है।

ऑनलाइन आकलन की समीक्षा क्यों आवश्यक है?

संक्रमण काल में शिक्षा व्यवस्था का पूरी तरह से ऑनलाइन माध्यम की ओर अचानक चले जाने के कारण भारत में स्कूली शिक्षा प्रणाली के सामने विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ सामने आई हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान केंद्र सरकार, राज्य सरकार, शैक्षिक निकायों और संबधित अधिकारियों की मुख्य चिंता यह रही है कि कैसे विद्यार्थियों के लिए उनके घरों में निर्बाध शिक्षा सुनिश्चित की जाए? ताकि विद्यार्थियों के संक्रमित होने के खतरे को कम से कम किया जा सके। इस संबंध में सरकार और शैक्षणिक निकाय विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार की ऑनलाइन प्रौद्योगिकी और तरीकों को चलन में लाने का प्रयास कर रहे हैं। इन सभी तरीकों में से एक प्रचलित तरीका है; ऑनलाइन मोड के माध्यम से स्कूलों को चलाना, जिसमें विद्यार्थी अपने घर पर या सुविधाजनक स्थान पर रह कर ऑनलाइन कक्षाएँ

लेते हैं। उन्हें ऑनलाइन शिक्षण सामग्री प्रदान की जाती है एवं ऑनलाइन आकलन के लिए ई-टेस्ट्स, पोर्टफोलियो, क्विजेज, डिस्कशन फोरम्स, प्रोजेक्ट्स, असाइनमेंट्स, ऑनलाइन मॉड्यूल, एवं ऑनलाइन परीक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रगति का ऑनलाइन आकलन भी किया जाता है।

ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से विद्यार्थी अर्थपूर्ण तरीके से नई अवधारणाओं को सीख रहें है या नहीं या उनकी समझ में गुणात्मक परिवर्तन आ रहा है या नहीं, ये तभी पता किया जा सकता है जब विद्यार्थियों का प्रभावी ऑनलाइन तकनीकों द्वारा ऑनलाइन आकलन संभव हो। ऑनलाइन आकलन महामारी के काल में फेस-टू-फेस (ऑफलाइन) आकलन का एक पर्याय तो बना है, लेकिन हमें पता है ऑनलाइन आकलन की अपनी कुछ सीमाएँ हैं, इसके द्वारा विद्यार्थियों के समग्र विकास का आकलन कर पाना बेहद मुश्किल प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त कोविड-19 काल में ये देखा गया है कि विद्यालयों को ऑनलाइन आकलन के लिए आवश्यक संसाधन जुटाना, शिक्षकों को इसके लिए प्रशिक्षण देना, विद्यार्थियों को भी जरूरी उपकरणों की ट्रेनिंग देना, सभी भौगोलिक क्षेत्रों में निर्बाध इंटरनेट की आपूर्ति न होना जैसी कई प्रमुख समस्याएँ विद्यार्थी, शिक्षक, स्कूल प्रबंधन और सरकारों के समक्ष आई हैं। ऐसे में ऑनलाइन आकलन की गुणवत्ता और प्रभावकारिता पर प्रश्नचिह्न लगता है? इसके साथ ही विद्यार्थियों को समय पर फीडबैक देने, क्लास टेस्ट्स आयोजित कराने में, अर्ध-वार्षिक और वार्षिक परीक्षाएँ आयोजित कराने में ऑनलाइन टूल्स, जैसे— कि गूगल क्लासरूम, जूम, गूगल मीट, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स, जी-मेल इत्यादि का प्रयोग व्यापक स्तर पर किया गया है। ऐसे में इतनी बड़ी तादाद में विद्यार्थियों का ऑनलाइन असेस्मेंट कितने प्रभावी ढंग से हो पाया है? ये बड़ा सवाल है, विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावक इस प्रकार के ऑनलाइन असेस्मेंट से कितने संतुष्ट हैं? यह जानना भी आवश्यक है।

शोधकर्ता ने अपने इस समीक्षा आलेख में खासतौर से विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यालयों के प्रशासन के समक्ष ऑनलाइन असेस्मेंट में आने वाली चुनौतियों की समीक्षा की है। इस समीक्षा के लिए शोधकर्ता ने कोविड-19 काल में ऑनलाइन आकलन से संबंधित लेखों, शोधपत्रों की खोजबीन विभिन्न प्रकार के रिसर्च प्लेटफार्म, जैसे— शोध गंगा, शोध गंगोत्री, रिसर्च गेट, गूगल स्कोलर इत्यादि से की है, लेकिन ऑनलाइन असेस्मेंट पर भारतीय संदर्भ में लेखों, शोधपत्रों की खासी कमी है, शोधकर्ता को ऐसा कोई भी शोधपत्र या लेख नहीं प्राप्त हुआ जिसमें इस विषय को व्यापक तरीके से सामने रखा हों। शोधकर्ता ने इस विषय पर पश्चिमी देशों में हुए शोधों का भी गंभीरता से अध्ययन किया है एवं ऑनलाइन आकलन पर जो समझ बनी है उसे भी इस समीक्षा आलेख में स्थान दिया है।

ऑनलाइन आकलन के उद्देश्य

हमें पता है आकलन एक ट्रैक प्रदान करता है और सीखने की प्रक्रिया में जो भी हो रहा है, उसकी निगरानी

भी करता है। हम ये जान चुके हैं कि आकलन का कार्य सुधार करना है और ये सुधार शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर हो सकते हैं। अब हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि ऑनलाइन मोड की शैक्षिक परिस्थितियों में ऑनलाइन आकलन के क्या उद्देश्य होते हैं? शोधकर्ता ने ऑनलाइन मोड की शैक्षिक परिस्थितियों में ऑनलाइन आकलन के पीछे के उद्देश्यों को संक्षेप में लिखने का प्रयास किया है—

- एक ही समय में विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली ऑनलाइन अधिगम शैलियों की उपयुक्तता के बारे में जानना।
- ऑनलाइन मोड में विद्यार्थी जिस अध्ययन सामग्री का उपयोग सीखने में करते हैं, उसकी उपयुक्तता और सार्थकता के विषय में जानने का प्रयास करना।
- शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों में नई ऑनलाइन तकनीकों को चुनने के लिए तत्परता पैदा करना।
- ऑनलाइन शिक्षण में किसी भी प्रकार के चयन करने में विद्यार्थियों के सामने आने वाली कठिनाइयों को समझना।
- यह जानने के लिए कि किस प्रकार का प्रशिक्षण शिक्षकों को ऑनलाइन मोड में शिक्षण प्रक्रिया को संचालित करने में बेहतर मदद कर सकता है।
- ऑनलाइन मोड द्वारा संपूर्ण या समग्र शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन तैयार करना भी है।
- ऑनलाइन शिक्षा की भविष्य की योजनाओं के बारे में जानने और आगे के आवश्यक कार्यों के बारे में जानने के लिए भी ऑनलाइन आकलन उपयोगी है।
- ऑनलाइन आकलन को व्यवहारपरक और विद्यार्थियों के अनुकूल बनाने के लिए कार्य करना।
- ऑनलाइन मोड शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षकों द्वारा बेहतर शिक्षण रणनीति का चुनाव करने, विद्यार्थियों की रुचि के बारे में जानने और उनकी जिज्ञासा को बनाए रखने के लिए क्या उपाय होने चाहिए? ये जानने में इसका प्रयोग किया जा सकता है।
- ऑनलाइन आकलन को यह जानने के लिए जाँच के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है कि विद्यार्थी जो कुछ भी सीख रहे हैं वह अर्थपूर्ण तरीके से हो रहा है या नहीं।
- हम ऑनलाइन मोड में शिक्षण-अधिगम को अधिक गुणात्मक सुधार की ओर कैसे ले जा सकते है? इस संबंध में बेहतर ऑनलाइन आकलन तकनीकों का विकास कैसे हो सकता है? जो निश्चित रूप से विद्यार्थियों, शिक्षकों के साथ-साथ शिक्षा से संबंधित विभिन्न निकायों की मददगार होंगे, इसलिए इन जैसे तमाम प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए वर्तमान में ऑनलाइन आकलन की आवश्यकता होती है।

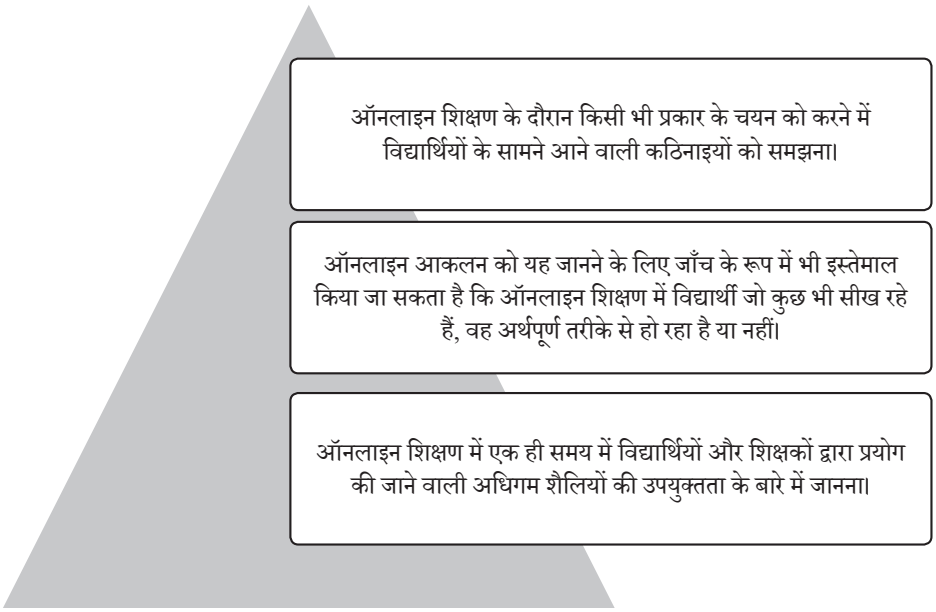

चित्र 3— ऑनलाइन आकलन के कुछ प्रमुख उद्देश्य

ऑनलाइन आकलन से संबंधित साहित्य की समीक्षा

अल-मक्बली. (2022) ने कोविड-19 काल के दौरान ऑनलाइन असेस्मेंट में आने वाली चुनौतियों को समझने के लिए एक शोध किया, जिसमें उन्होंने ओमान के 60 अकादमिक स्टाफ से एक सर्वे के माध्यम से डाटा एकत्रित किया जिनमें से 4 का सेमी-स्ट्रक्चर्ड इंटरव्यू किया गया। इस शोध के परिणामों पर नजर डालें तो हमें पता चलता है कि ऑनलाइन असेस्मेंट के दौरान विद्यार्थी का कैमरा चालू करने से मना करना, शैक्षणिक बेईमानी, स्ट्रक्चर्ड ऑनलाइन असेस्मेंट टूल बनाने में अधिक समय का व्यय, ग्रुपवर्क के आकलन में कठिनाई इत्यादि, जैसी चुनौतियाँ सामने आती हैं, जिस कारण आकलन की वैद्यता और विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगता है। बलेउल्मी. सालिहा. (2022) ने कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन आकलन में आने वाली चुनौतियों पर एक शोध किया। इस शोध को करने के लिए वर्णनात्मक विधि द्वारा गुणात्मक डाटा को फोकस ग्रुप इंटरव्यू के माध्यम से पाँच शिक्षकों से एकत्रित किया गया। शोध के परिणाम बताते हैं कि कोविड-19 महामारी के दौरान विद्यार्थियों के आकलन में ऑनलाइन असेस्मेंट काफी मददगार है। इस शोध के अन्य परिमाण बताते हैं कि ऑनलाइन असेस्मेंट में शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थियों की ट्रेनिंग का आभाव, तकनीकी समस्याएँ और शैक्षणिक बेईमानी जैसी समस्याएँ प्रमुखता से सामने आती हैं। अब्दुह. (2021) ने कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन आकलन के लिए शिक्षकों के दृष्टिकोण को जानने

के लिए एक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में ऑनलाइन आकलन को लेकर चार आयामों को शोध में लिया गया, जिसमें— (1) शिक्षकों का ई-अधिगम के आकलन के लिए दृष्टिकोण (2) प्रयोग में आने वाले ऑनलाइन आकलन के प्रकार (3) ऑनलाइन आकलन में शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों के प्रति दृष्टिकोण (4) ऑनलाइन आकलन के प्रति पुरुष और महिला टीचर्स के दृष्टिकोण में अंतर, इस शोध के परिणाम बताते हैं कि शिक्षक ऑनलाइन आकलन को लेकर मध्यम (मॉडरेट) दृष्टिकोण रखते हैं। इस शोध के कुछ अन्य परिणाम बताते हैं कि अधिकतर शिक्षक ऑनलाइन असेसमेंट में चुनौती का अनुभव करते हैं जबकि पुरुष और महिला टीचर्स का ऑनलाइन आकलन के प्रति दृष्टिकोण लगभग एक समान है।

मैककॉनलॉग, टी. (2020) ने एक अध्ययन आयोजित किया जिसमें उन्होंने सभी प्रकार के आकलन को डिजाइन करने में आने वाली चुनौतियों की व्याख्या की। मूल रूप से उनका अध्ययन उच्च शिक्षा के लिए एक मॉड्यूलर डिग्री प्रोग्राम पर केंद्रित था। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि चूँकि छात्र विभिन्न प्रकार के आकलन का अनुभव कर सकते हैं, इसलिए एक असाइनमेंट को अगले चरण में ले जाने में कठिनाई होती है। सालिएवा, एस. और लेवेस्ले, जे. (2018) ने विशेष रूप से आकलन प्रथाओं को बदलने के लिए विद्यार्थियों के अंदर अनुसंधान कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया और तर्क दिया है कि आकलन कौशल केवल सीखने को मापने के लिए नहीं है, अपितु यह सीखने को प्रेरित भी करता है। महर्ग, पी. और वेब, जे. (2019) अपनी पुस्तक *ऑफ टेल्स एंड डॉग्स : स्टैंडर्ड, स्टैंडर्डाइजेशन, एंड इनोवेशन इन असेसमेंट* में बताते हैं कि उन्होंने आकलन में कुछ आधिपत्य मूल्यों और प्रथाओं को पाया है और यह भी सवाल उठाया कि इन विशेषताएँ द्वारा अर्थपूर्ण सीखने को प्राप्त करना क्यों मुश्किल हैं? घुटने, पी. और कोलिंग्स, जे. (2018) ने अपने शोध कार्य में इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे समावेशी आकलन ने विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों को एक समान और संतोषजनक सीखने का अनुभव प्रदान किया जिसने अकादमिक या व्यावसायिक मानकों से समझौता नहीं किया। उनका कहना है कि उच्च शिक्षा में आकलन रणनीतियों और फीडबैक के विकास में योगदान देने वाले कई चर हैं। मैककॉनलॉग, टी. (2020) अपने अध्ययन में समावेशी पाठ्यक्रम और आकलन प्रथाओं पर एक अध्ययन का विश्लेषण करते हुए कहते हैं कि उच्च शिक्षा में व्यापक भागीदारी एजेंडा के कारण विद्यार्थियों के विविध समूह आते हैं। उनमें से कुछ की गैर-पारंपरिक पृष्ठभूमि होती है और इसलिए हमें पाठ्यक्रम और आकलन रणनीतियों में भी बदलाव करने की आवश्यकता है। हमें उन विद्यार्थियों की जरूरत को पूरा करना चाहिए, जो विभिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं। फर्थ, एन. और न्यूबेरी-जोन्स, सी. (2019) ने यूट्यूब पीढ़ी के लिए डिजिटल आकलन पर काम किया है, उन्होंने विद्यार्थियों से लगातार ऑनलाइन बातचीत के नए तरीकों की तलाश की है। उन्होंने सोशल मीडिया के क्षेत्र में इन सभी विकासों

को नवाचार के रूप में देखा और आकलन के एक ऐसे तरीके को प्रकट करने का प्रयास किया जो इस प्रकार से ऑनलाइन सीखने के लिए उपयुक्त है। वांग, एक्स और अन्य (2017) ने कंप्यूटर प्रोग्रामिंग से संबंधित शोध कार्य किया है और अपने शोध के माध्यम से बताया कि यह विद्यार्थियों के विचारों, अवधारणाओं और कौशल को बढ़ावा देने के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण मुद्दा है। अपने शोध कार्य में, उन्होंने इन सभी प्रकार की समस्याओं से निपटने के लिए ऑनलाइन सहकर्मी आकलन आधारित प्रणालियों पर प्रकाश डाला है।

ऑनलाइन आकलन में आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ

जब हम ऑनलाइन आकलन में आने वाली चुनौतियों की समीक्षा कर रहे हैं तो हमें ज्ञात है कि विद्यार्थियों, शिक्षकों, विद्यालयों के प्रबंधन, और नीति निर्माताओं के लिहाज से ये चुनौतियाँ अलग-अलग हो सकती हैं जिनका जिक्र इस आलेख में विस्तार से नीचे किया गया है। अगर ऑनलाइन आकलन में समग्र रूप से कुछ प्रमुख चुनौतियों की बात की जाए तो उन्हें नीचे बिंदुवार लिखा गया है—

- **विद्यार्थियों से जुड़ाव की समस्या**— ऑनलाइन आकलन में विद्यार्थियों के समक्ष सबसे बड़ी समस्या जुड़ाव की समस्या है, क्योंकि ऑनलाइन आकलन फेस-टू-फेस रूप में न घटित हो कर इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन घटित होता है जो कि विद्यार्थियों के लिए काफी नया है। कई मायनों में ये विद्यार्थियों के लिए नीरस और उबाऊ भी होता है क्योंकि इस प्रक्रिया में शिक्षक या निर्देशक कहीं दूर बैठ कर प्रक्रिया को नियंत्रित कर रहा होता है जिससे विद्यार्थी और शिक्षक के बीच वर्बल और नॉन-वर्बल कम्युनिकेशन स्थापित करने में समस्याएँ आती हैं।
- **तकनीकी कौशलों का अभाव**— ऑनलाइन आकलन में सही से अपनी प्रतिक्रिया दर्ज करने के लिए विद्यार्थियों एवं शिक्षकों दोनों को कुछ मूलभूत तकनीकी कौशल जैसे कि फोन या लैपटॉप में इंटरनेट कनेक्शन चालू करना और बंद करना, इंटरनेट से फाइल्स को डाउनलोड और अपलोड करना, ऑनलाइन क्लासरूम से शैक्षणिक सामग्री को पढ़ना इत्यादि आना चाहिए। कई बार विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों ही इस प्रकार के तकनीकी कौशलों का उपयोग करने में स्वयं को असहज पाते हैं।
- **शैक्षणिक बेईमानी**— हमें ज्ञात है ऑनलाइन आकलन पूरी तरह से ऑफलाइन या फेस-टू-फेस आकलन से अलग होता है, इसमें प्रतिभागी अपने घर या सुविधाजनक स्थान पर बैठ कर ऑनलाइन आकलन में भाग लेता है, क्योंकि ऑनलाइन आकलन की प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी या प्रतिभागी कई बार मोबाईल फोन, पहले से रखी शिक्षण सामग्री, या फिर घर में किसी बड़े व्यक्ति या मित्र की सहायता ले लेते हैं जोकि शैक्षणिक बेईमानी के अंतर्गत आता है। ऐसे विद्यार्थियों की प्रतिभा का सही आकलन ऑनलाइन आकलन के माध्यम से करना काफी कठिन है।
- **विश्वसनीय ऑनलाइन आकलन सिस्टम का अभाव**— ऑनलाइन आकलन की प्रक्रिया एक बदलाव के दौर से गुजर रही है। अभी वर्तमान में हमारे पास ऐसा कोई भी विश्वसनीय

ऑनलाइन आकलन सिस्टम या तकनीक नहीं है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के समग्र विकास का आकलन किया जा सके।

- **इंटरनेट कनेक्टिविटी**— ऑनलाइन आकलन के लिए इंटरनेट एक मूलभूत आवश्यकता है, यूँ तो अपने देश में इंटरनेट क्रांति को आए लगभग एक दशक से ऊपर का समय हो चुका है, लेकिन आज भी गाँव, दूर-दराज के क्षेत्रों में, सीमांत क्षेत्रों में आज भी सतत इंटरनेट की सुविधा दुर्लभ है। यहाँ तक की शहरों और कस्बों में मिलने वाले इंटरनेट की स्पीड भी काफी कम है, जिस कारण कई बार लाइव ऑनलाइन कक्षा (क्लासेज) प्रसारित करने में एवं विद्यार्थियों का ऑनलाइन आकलन करने में खासी दिक्कतें आती हैं।
- **खराब तकनीकी इंफ्रास्ट्रक्चर**— भारत एक विकासशील देश है, तकनीक के मामले में हमें अभी काफी प्रगति करने की आवश्यता है हालाँकि, पिछले 10 वर्षों में तकनीक के लिहाज से भारत ने काफी प्रगति की है, फिर भी पूरे देश में गुणात्मक ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने एवं प्रभावी ऑनलाइन आकलन को सुनिश्चित करने के लिए एक बेहतर तकनीकी इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करने की जरूरत को स्पष्ट देखा जा सकता है।

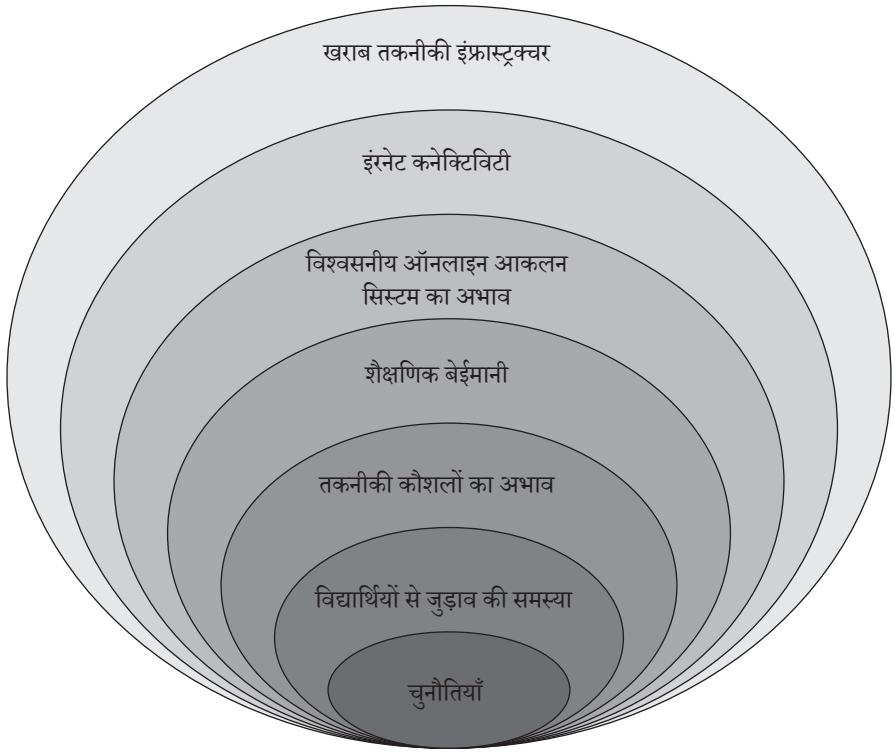

चित्र 4— ऑनलाइन आकलन में प्रमुख चुनौतियाँ

ऑनलाइन आकलन में विद्यार्थियों और अभिभावकों के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ

कोविड-19 महामारी में शिक्षा व्यवस्था का ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम की ओर अचानक शिफ्ट हो जाने के कारण विद्यार्थियों और अभिभावकों का ऑनलाइन आकलन करने में विभिन्न प्रकार की समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ा है जिनका विवरण बिंदुवार नीचे दिया गया है—

- दूर-दराज के क्षेत्रों में एवं खासकर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी इस तरह के ऑनलाइन शिक्षण और आईसीटी आधारित शिक्षण-अधिगम से अभी ज्यादा परिचित नहीं हैं, इसलिए कुछ स्थितियों और मामलों में उन्हें इस तरह के सवालों का जवाब देना मुश्किल लगता है जो ऑनलाइन आकलन पर आधारित होते हैं।
- ऑनलाइन आकलन में प्रश्नों का स्वरूप या मॉड्यूल का प्रकार पूरी तरह से अलग होता है, इसलिए कभी-कभी विद्यार्थियों को कई प्रश्न मुश्किल और प्रासंगिक नहीं लगते है। ऐसा इसलिए भी होता है, क्योंकि पहले से विद्यार्थियों को ऑनलाइन आकलन के लिए प्रशिक्षित नहीं किया गया था।
- विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिए ऑनलाइन आकलन की प्रकृति को समझने के लिए समय दिए जाने की आवश्यकता है। जो उन्हें प्रदान किया जाना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने और समझने की गति भिन्न होती है।
- हमें पता है प्रत्येक कक्षा में वैयक्तिक भिन्नताएँ पायी जाती हैं और शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों की विविधता के अनुसार अपनी आकलन तकनीकों या मॉड्यूल का चयन करते हैं, लेकिन आकलन के ऑनलाइन मोड में विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार का लचीलापन नहीं होता है।
- ऑनलाइन मोड में लापरवाह तरीके से किया गया आकलन विद्यार्थियों पर बहुत बुरा और नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, क्योंकि ऑनलाइन मोड में विद्यार्थियों को हो रहे आकलन से बहुत उम्मीदें होती हैं।
- ऑनलाइन आकलन में कभी-कभी प्रयोग हो रही प्रौद्योगिकी और भाषा, विद्यार्थी के लिए बाधा हो सकती है।
- ऑनलाइन आकलन में अभिभावकों के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए वित्तीय मुद्दे भी बड़ी बाधा हैं, क्योंकि आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग या हाशिए के वर्ग के विद्यार्थियों के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले इंटरनेट कनेक्शन, वाई-फाई, ब्रॉडबैंड, स्मार्टफोन और लैपटॉप की पहुँच संभव नहीं है।

ऑनलाइन आकलन में स्कूल शिक्षकों के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ

हम जानते हैं कि आकलन शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। यह शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। शिक्षकों के दृष्टिकोण से, यह उन्हें विशिष्ट शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एवं शिक्षण की प्रभावशीलता को मापने में सक्षम बनाता है। ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम मोड की ओर शिक्षण प्रक्रिया के अचानक शिफ्ट हो जाने के कारण, शिक्षकों के सामने कई चुनौतियाँ उत्पन्न हुईं हैं। शोधार्थी ने

विभिन्न प्रकार के शोधों का गंभीरता से अध्ययन करने के पश्चात ऑनलाइन शिक्षण और ऑनलाइन आकलन के दौरान आने वाली चुनौतियों को अपनी समझ के अनुसार नीचे लिखने का प्रयास किया है जिसका विवरण निम्नवत है—

प्रशिक्षण की कमी

पिछले लगभग दो वर्षों में हमारे आसपास की चीजें बहुत तेजी से बदली हैं। कोविड-19 महामारी के देश भर में तेजी से पैर पसारने के कारण हमारे स्कूलों के शिक्षकों को अचानक ऑनलाइन शिक्षण की तरफ शिफ्ट होना पड़ा है, ऐसे में शिक्षकों को पहले से ऑनलाइन मोड में प्रशिक्षित करने और उन्हें ऑनलाइन आकलन तकनीकों के लिए प्रशिक्षित करने का कोई विश्वनीय तरीका हमारे पास नहीं था।

प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता

हम जानते हैं भारत जैसे बड़े और विविधता वाले देश में सभी स्कूलों के शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण या आ.ई.सी.टी.-आधारित शिक्षण-अधिगम से ज्यादा परिचित नहीं हैं, इसलिए उन्हें ऑनलाइन आकलन के संबंध में तत्काल प्रशिक्षण की आवश्यकता है। हमें इस संबंध में प्रौद्योगिकी की अच्छी समझ और जानकारी रखने वाले विशेषज्ञों की आवश्यकता है, ताकि शिक्षक नवीन तकनीकों से परिचित हो सकें।

विद्यार्थियों की ग्रेडिंग

ऑनलाइन आकलन में पारदर्शिता की कमी के कारण विद्यार्थियों की ग्रेडिंग भी पारदर्शी तरीके से नहीं हो पाती है, इसलिए हमें नवीन और विश्वसनीय ग्रेडिंग सिस्टम तैयार करने की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थी अपनी आकलन प्रक्रिया और ग्रेडिंग तकनीक को जान सकें और किसी प्रकार की अपारदर्शिता होने की स्थिति में, वे उसे चुनौती भी दे सकें।

आकलन का पैटर्न

स्कूली शिक्षकों के सामने ऑनलाइन आकलन का पैटर्न तय करना भी एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि इसके लिए अभी तक कोई मान्य और विश्वसनीय पैटर्न उपलब्ध नहीं है।

गुणवत्ता वाले प्रश्न तैयार करना

शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन आकलन में विद्यार्थियों के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले प्रश्नों का एक पूल तैयार किया जाना चाहिए जिसके माध्यम से वे ऑनलाइन मोड के माध्यम से विद्यार्थियों का आकलन कर सकें।

समय सुनिश्चित करना

प्रायः यह देखा गया है कि ऑनलाइन आकलन में विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों का भी काफी ज्यादा समय नष्ट होता है, इसलिए यह सुनिश्चित होना चाहिए कि आकलन की प्रक्रिया त्वरित हो और इसमें समय नष्ट न हो।

ऑनलाइन आकलन में विद्यालयों के प्रबंधन के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ

कोविड-19 महामारी के दौरान बड़े स्तर पर विद्यालयों के प्रबंधन को भी अपनी कार्यशैली बदलने की जरूरत महसूस हुई है। हम कह सकते हैं कि पिछले लगभग दो वर्षों से विद्यालयों में शिक्षण कार्य ऑनलाइन और आई.सी.टी. आधारित शिक्षण-अधिगम की ओर स्थानांतरित हो गया है। इस स्थिति में स्कूल लीडर्स और शिक्षकों की भूमिका भी बदल गई है और इस संबंध में ऑनलाइन आकलन विद्यालयों के प्रबंधन के सामने नई चुनौतियाँ ले कर आया है।

- स्कूलों के प्रबंधन के सामने पहली बड़ी चुनौती कोविड-19 महामारी के दौरान विद्यार्थियों के लिए निर्बाध ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम सुनिश्चित करना था। इस प्रकार के शिक्षण के कार्यान्वयन के लिए उन्हें अपने शिक्षण-अधिगम संसाधनों को ऑनलाइन मोड के लिए विकसित करना पड़ा एवं ऐसे शिक्षकों का चयन करना पड़ा जो ऑनलाइन मोड के माध्यम से विद्यार्थियों का आकलन कर सकते हों। ये प्रमुख कार्य स्कूलों के प्रबंधन के लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आए हैं।
- आकलन की गुणवत्ता आकलन के लिए तैयार किए गए प्रश्नों के पूल की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, इसलिए स्कूलों के प्रबंधन के लिए यह एक चुनौती थी कि किस प्रकार विषय विशेषज्ञों के माध्यम से प्रश्नों का एक उच्च गुणवत्तापूर्ण पूल विकसित किया जाए जो ऑनलाइन आकलन के लिए प्रासंगिक भी हो।
- ऑनलाइन-आधारित आकलन में अच्छी गुणवत्ता वाला इंटरनेट कनेक्शन एक प्रमुख कारक के रूप में काम करता है, इसलिए स्कूल संगठनों के अंदर स्थायी इंटरनेट कनेक्शन विकसित करना और ऑनलाइन शिक्षण के लिए जो शिक्षक घर से काम कर रहे हैं, उनको उसी प्रकार का निर्बाध इंटरनेट कनेक्शन प्रदान कराना भी स्कूल संगठनों के लिए एक चुनौती के रूप में सामने आया है।
- ऑनलाइन आकलन में प्रभावी संचार एक प्रमुख हस्तक्षेप चर के रूप में कार्य करता है, क्योंकि दूरस्थ क्षेत्र के स्थानों में, ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन आकलन के संबंध में विद्यार्थियों के संदेह को स्कूल प्रबंधन द्वारा स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- ऑनलाइन परीक्षा में सुरक्षा और प्रक्रिया की विश्वसनीयता ऑनलाइन आकलन में बहुत महत्वपूर्ण होती है, इसलिए सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देने का प्रयास होना चाहिए। प्रक्रिया के बारे में स्पष्टीकरण, आकलन के बारे में पारदर्शिता स्कूल प्रबंधन द्वारा प्रदान की जानी चाहिए, ताकि ऑनलाइन आकलन के प्रति विद्यार्थियों में विश्वास पैदा हो सके।

ऑनलाइन आकलन में नीति-निर्माताओं समक्ष आने वाली चुनौतियाँ

यदि हम भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार और सकारात्मक परिवर्तन के उद्देश्य से जारी किए गए कुछ प्रमुख दस्तावेजों, जैसे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 1986, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 का अध्ययन करें तो हम यह पाते हैं कि इन सभी दस्तावेजों ने विद्यालयी पाठ्यक्रम में आई.सी.टी. आधारित शिक्षण-अधिगम के समावेशन पर जोर देते हुए ऑनलाइन शिक्षा के भारत में विकास और इसे सर्वसुलभ बनाने पर जोर दिया है। हम ये कह सकते है कि क्रमिक रूप से भारतीय शिक्षा व्यवस्था ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम की तरफ रुख कर चुकी थी, लेकिन कोविड-19 महामारी के अचानक से इतने व्यापक और बड़े स्तर पर पैर पसारने के कारण भारत जैसे बड़े और विविधता से भरे देश को अपनी पूरी शिक्षा व्यवस्था को ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम की ओर शिफ्ट करना पड़ा है। ऑनलाइन आधारित

शिक्षण-अधिगम की ओर अचानक शिफ्ट हो जाने के कारण शिक्षण-अधिगम से संबंधित हितधारक इस प्रकार के परिवर्तन के लिए तैयार नहीं थे, इसलिए अब नीति निर्माताओं के सामने नई चुनौतियाँ उत्पन्न होती दिख रही हैं, क्योंकि कोई भी नीति निर्माता शिक्षा व्यवस्था में हुए इस प्रकार के आमूल-चूल परिवर्तन के लिए तैयार नहीं थे। ऐसे में निति-निर्माताओं के समक्ष आ रही चुनौतियों को इस प्रकार समझा जा सकता है—

- आर.टी.ई.एक्ट 2009, 16 वर्ष की उम्र तक के विद्यार्थियों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित करता है, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा के युग में, नीति-निर्माताओं के लिए इस प्रकार की शिक्षा को पूरे भारत में बनाए रखना एक बड़ी चुनौती हो सकती है।
- ऑनलाइन आकलन के लिए अब तक कोई अधिकृत दस्तावेज या नीति हमारे समक्ष उपलब्ध नहीं है।
- ऑनलाइन आकलन में पारदर्शिता की कमी महसूस की जाती है, इसलिए नीति-निर्माताओं और संबंधित सरकारों की ओर से अधिकृत नीति या दस्तावेजों की तत्काल आवश्यकता है ताकि हम शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों के बीच विश्वास बना सकें।
- ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम में नीति-निर्माताओं के सामने स्कूलों में पढ़ाई के स्तर को अच्छा बनाए रखना भी एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि आकलन से जुड़ी नीतियाँ स्कूलों की गुणवत्ता की समीक्षा करती हैं, इसलिए आकलन के ऑनलाइन मोड में पूरे भारत के स्कूलों के मानक और गुणवत्ता को सुनिश्चित करना आज के समय में नीति-निर्माताओं के लिए एक बड़ी चुनौती है।

स्कूलों के शिक्षकों, संगठनों एवं नीति-निर्माताओं के लिए सुझाव

- ऑनलाइन आकलन से संबंधित किसी दस्तावेज या नीति की तत्काल आवश्यकता है जो एक दिशानिर्देश के रूप में काम कर सकती है और शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच विश्वास पैदा कर सकती है।
- ऑनलाइन परीक्षा और आकलन के लिए स्कूलों के प्रबंधन द्वारा छात्रों, शिक्षकों और स्कूल के कर्मचारियों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
- समय पर और लचीली ओपन बुक टेस्ट जो उचित रूप से संरचित हो, आयोजित होने चाहिए। इस संबंध में विद्यार्थियों को उचित दिशानिर्देश और समय स्लॉट आवंटित किए जाने चाहिए, ताकि वे एक निश्चित समय सीमा में अपने उत्तर अपलोड कर सकें।
- ई-आकलन को ऑनलाइन या आई.सी.टी.-आधारित शिक्षण-अधिगम के हिस्से के रूप में एकीकृत किया जाना चाहिए और यह पाठ्यक्रम डिजाइन का एक हिस्सा होना चाहिए।
- स्कूलों के प्रबंधन को साहित्यिक चोरी रोकने के लिए प्लेजेरिस्म चेकर्स आदि, जैसे— सॉफ्टवेयर का उपयोग करना चाहिए जो परीक्षाओं और ऑनलाइन आकलन प्रक्रियाओं की वैधता और विश्वसनीयता को बढ़ाता है।

- ऑनलाइन सॉफ्टवेयर, जैसे— गूगल क्लासरूम, लेसन अप, स्पाइरल, क्लास लो, पीयरडेक आदि का प्रयोग प्रारंभिक आकलन के लिए किया जाना चाहिए।

विचार-विमर्श

हम जानते हैं कि कोविड-19 महामारी ने स्कूली शिक्षा प्रणाली के सभी आयामों और क्षेत्रों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। महामारी की अवधि के दौरान ऑनलाइन शिक्षण और आई.सी.टी. आधारित शिक्षण-अधिगम ही केवल शिक्षा प्रदान करने के माध्यम थे। ऐसे में प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण के साथ-साथ ऑनलाइन आकलन के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, स्कूल कर्मचारियों के लिए उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस की गई है। महामारी के दौर में और अब तक ऑनलाइन आकलन ही विद्यार्थियों के समग्र प्रदर्शन का आकलन करने का एकमात्र तरीका या प्रणाली के रूप में उभर कर सामने आया है। पिछले कुछ महीनों का अनुभव हमें सिखाता है कि आकलन के मापदंडों को विभिन्न पहलुओं पर बदला जाना चाहिए, खासकर अगर हम इसे ऑनलाइन मोड के माध्यम से लागू करते हैं। नीति-निर्माताओं को ऑनलाइन आकलन से संबंधित दस्तावेजों, मॉड्यूलों को विकसित और डिजाइन करना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों के समक्ष भी ऑनलाइन आकलन की सार्थकता सिद्ध हो सके और इसके प्रति उनमें विश्वास पैदा हो सके। भारत में प्रभावी ऑनलाइन शिक्षा और ऑनलाइन आकलन के समक्ष कई प्रकार की चुनौतियाँ है, जिनको हमने इस समीक्षा आलेख में समझने का प्रयास किया है। हम ये उम्मीद कर सकते हैं कि इस समीक्षा आलेख में जिन चुनौतियों का जिक्र विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक, विद्यालयों के संगठन और निति-निर्माताओं के लिए किया गया है, इन पर चिंतन और मनन भविष्य में ई-आकलन या ऑनलाइन आकलन के प्रति विश्वसनीयता को बढाने का कार्य करेगा जिससे सही मायने में भारत जैसे देश में गुणवत्तापरक ऑनलाइन और आई.सी.टी. आधारित शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने के उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।

संदर्भ

अब्दुह. 2021. फुल टाइम ऑनलाइन असेस्मेंट ड्यूरिंग कोविड-19 लॉकडाउन : ई.एफ.एल. टीचर्स परसेप्शन्स. *एशियन ई.एफ.एल. जर्नल*. 26 जुलाई, 2022 को https://www.researchgate.net/publication/349103573_Fulltime_Online_Assessment_during_COVID_-19_Lockdown_EFL_Teachers'_Perceptions/stats से प्राप्त।

अल-मक्बली. 2022. द इम्पैक्ट ऑफ ऑनलाइन असेस्मेंट चैलेंजेस ऑन असेस्मेंट प्रिंसिपल्स ड्यूरिंग कोविड-19 इन ओमान. *जर्नल ऑफ यूनिवर्सिटी टीचिंग और लर्निंग प्रैक्टिस*. 26 जुलाई, 2022 को https://www.researchgate.net/publication/359848688_The_impact_of_online_assessment_challenges_on_assessment_principles_during_COVID-19_in_Oman से प्राप्त।

घुटने, पी. और जे. कोलिंग्स. 2018. एन. औफकोर्ट माइकलिस और एफ. लिंडे (संपादक). टुवर्ड्स इन्क्लुसिव असेस्मेंट : द जर्नी अट द यूनिवर्सिटी ऑफ प्लाईमाउथ. *डायवर्सिटैट लर्नन एंड लेरेन– ईन होचस्चुलबुच* (पृ.सं. 31–43). वेरलाग बारबरा बुड्रिच, ओप्लाडेन, बर्लिन, टोरंटो.

फर्थ, एन. और सी. न्यूबेरी-जोन्स. 2019. डिजिटल असेस्मेंट फॉर द यू-ट्यूब जनरेशन : रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिस इन 21st सेंचुरी लीगल एजुकेशन. ए. इन बोन और पी. महर्ग (संपादक). *क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स ऑन स्कॉलरशिप ऑफ असेस्मेंट एंड लर्निंग इन लॉ* : वॉल्यूम 1: इंग्लैंड (पृ.सं. 51–78). ए.एन.यू. प्रेस, ऑस्ट्रेलिया. 19 सितंबर, 2021 को http://www.jstor.org/stable/j.ctvp7d4db.8 से प्राप्त।

बलेउल्मी, सालिहा. 2022. चैलेंजेस ऑफ ऑनलाइन असेस्मेंट ड्यूरिंग कोविड-19 पैन्डेमिक : एन एक्सपीरियंस ऑफ स्टडी स्किल्स टीचर्स. *अल्जीरियन साइंटिफिक जर्नल प्लेटफॉर्म*. 26 जुलाई, 2022 को https://www.researchgate.net/publication/359992791_Challenges_of_online_assessment_during_Covid19_Pandemic_An_experience_of_Study_Skills_teachers से प्राप्त।

महर्ग, पी. और और जे. वेब. 2019. ऑफ टेल्स एंड डॉग्स : स्टैंडर्ड स्टैंडर्डाइजेशन. एंड इनोवेशन इन असेस्मेंट. ए. इन बोन एंड पी. महारग (संपादक). *क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स ऑन स्कॉलरशिप ऑफ असेस्मेंट एंड लर्निंग इन लॉ* : वॉल्यूम 1: इंग्लैंड पृ.सं. *25–50.* ए.एन.यू. प्रेस, ऑस्ट्रेलिया. 19 सितंबर, 2021 को http://www.jstor.org/stable/j.ctvp7d4db.7 से प्राप्त।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986.* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. 2 दिसंबर, 2021 को https://www.education.gov.in/sites/upload-files/mhrd/files/upload-document/NPE86-mod92.pdf से प्राप्त।

मैककॉनलॉग, टी. 2020. डेवलपिंग इन्क्लुसिव करिकुलम एंड असेस्मेंट प्रैक्टिसेस. *इन असेस्मेंट एंड फीडबैक इन हायर एजुकेशन : अ गाइड फॉर टीचर्स.* (पृ.सं. 137–150). यू.सी.एल. प्रेस, लंदन. http://doi:10.2307/j.ctv13xprqb.14

———. 2020. डिजाइनिंग असेस्मेंट अक्रॉस अ प्रोग्राम. *इन असेस्मेंट एंड फीडबैक इन हायर एजुकेशन : अ गाइड फॉर टीचर्स* (पृ.सं. 53–63). यू.सी.एल. प्रेस, लंदन. http://doi:10.2307/j.ctv13xprqb.9

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. 12 दिसंबर, 2021 को https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf से प्राप्त।

वांग, एक्स. और अन्य. 2017. एन्हान्सिंग स्टूडेंट्स कंप्यूटर प्रोग्रामिंग पेर्फोर्मेंसेस, क्रिटिकल थिंकिंग अवेयरनेस एंड एटिट्यूडस टुवर्ड्स प्रोग्रामिंग : अन ऑनलाइन पियर असेस्मेंट अटेम्प्ट. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी.* 20(4). पृ.सं. 58–68. http://www.jstor.org/stable/26229205

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली.

सालिएवा, एस. और जे. लेवेस्ले. 2018. *लर्निंग ओरियन्टेड असेस्मेंट. वी. टोंग, ए. स्टैंडेन, और सोतिरियो एम. (संपादक).* शेपिंग हायर एजुकेशन विद स्टूडेंट्स : वेज टू कनेक्ट रिसर्च एंड टीचिंग (पृ.सं. 178–187). यूसीएल प्रेस, लंदन. 19 सितंबर, 2021 को http://www.jstor.org/stable/j.ctt21c4tcm.29 से प्राप्त।